Volume-08
Issue-12
December-2021

ISSN: 2349-7637 (Online)
RESEARCH HUB International Multidisciplinary Research Journal
https://rhimrj.co.in/ [Peer-Reviewed Journal]
https://doi.org/10.53573/rhimrj.2021.v08i12.011

महाकवि भास के नाटकों में शिक्षण व्यवस्था एवं स्त्रियों की स्थिति

डॉ. निरमा मीना

संस्कृत विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 15 December 2021

Keywords
शिक्षण व्यवस्था, सहानुभूति, शिष्टाचार, तपस्विनी, सूत्रधार, प्रतिहारी।

Corresponding Email:
raj126jareda@gmail.com

ABSTRACT

भास के समय में नारी समाज का एक प्रमुख अंग थी। माता, प्रेयसी, पत्नी और गृहिणी आदि के विविध रूपों में वह अपने कर्त्तव्य का सम्यक् निर्वाह करती थी। भासकालीन समाज में नारियाँ विभिन्न कलाओं में दक्ष होती थी। उनके विभिन्न नाटकों के अध्ययन के पश्चात् नारी शिक्षा का स्वरूप देखा जा सकता है।

भासकालीन समाज में स्त्रियाँ विभिन्न कलाओं में पारंगत होती थी। ''अविमारक नाटक की कुरंगी सुशिक्षित और विभिन्न कलाओं में पारंगत है। वह गम्भीर और वाक् प्रवीणा भी है। वीणावादन में उसका कौशल प्रशंसनीय है। वह जब वीणा बजाती है तो जो नाद प्रकट होता है वह जड़ चेतन को विमुग्ध कर देता है।1 वासवदत्ता सुशिक्षित और विभिन्न कलाओं में दक्ष है। वह वीणा वादन के लिए नारदीय वीणा की सुशिक्षा लेती है। वीणा शिक्षण के लिए उत्तरा नामक श्रेष्ठ वैतालिका के शिक्षण केन्द्र पर जाती है–

''उत्तराया वैतालिक्याः सकाशे वीणां शिक्षितुं नारदीयां गतासीत् ।2

'प्रतिमा' नाटक की स्थापना की नटी गायन विद्या में निपुण है। वह सूत्रधार के आदेश पर दर्शकों के मनोविनोद के लिए शरद ऋतु पर एक गीत गाती है। सूत्रधार प्रविष्ट होने वाली प्रतिहारी की पूर्व सूचना इस स्थापना में देता है।3 'प्रतिज्ञायौगन्धरायण' नाटक की स्थापना में नटी पति के द्वारा बुलाये जाने पर तत्क्षण प्रवेश करती है। वह गाने में निपुण है। अतः सूत्रधार उसके गाने से दर्शकों को प्रसन्न करके ही अपना प्रकरण प्रस्तुत करता है।4 नारियाँ गेंद जैसे खेलों में दक्ष होती थी। केवल दक्ष ही नहीं अपितु उन्हें इतनी स्वतंत्रता प्राप्त थी कि उद्यानों में वे अपनी सहेलियों के साथ कन्दुक क्रीड़ा कर सकती थी। जब तक कपोलों पर पसीना नहीं उभर आता था तब तक मनोहारी खेल खेलती थी–

''कन्दुकेन क्रीडित्वाधिकसञ्जातरागो परकीयाविव ते हस्तौ संवृत्तौ'' ।5

पर्दा प्रथा–महाकवि भास के समय में पर्दा प्रथा थी। भास के कुछ नाटकों में अवगुण्ठन का उल्लेख आया है। ''प्रतिमानाटक'' में वन जाते समय राम सीता से अवगुण्ठन दूर करने को कहते हैं।6 दशरथ की रानियाँ भी प्रतिमा गृह जाते समय अवगुण्ठन लेकर जाती है।7 वासवदत्ता जो अवगुण्ठन में थी उसे देखने के लिए राजा उदयन आदेश देते हैं–

''संक्षिप्यतां जवनिका'' ।8

धार्मिक कार्यों में सहभागिता

धार्मिक कार्यों के सम्पादन में स्त्रियों का विशेष महत्त्व था। इसलिये उसे सहधर्मिणी धर्मपत्नी आदि नामों से अभिहित किया जाता था। समाज में विधवाओं का सम्मान नहीं था। तथापि उनका जीवन त्यागमय और तपोमय होता था। पर समाज उन्हें उपेक्षा की दृष्टि से देखता था ।

स्त्रियों की स्थिति– भास के समय चारों वर्णों का उल्लेख हुआ है। धूता और चारुदत्त की पत्नी ब्राह्मणी वर्णा है। प्रतिहारी तथा परिचालिका के रूप में काम करने वाली स्त्रियां शूद्र वर्ण की हैं। राजा की अंग रक्षिकाएं यवनियां हैं। वसन्तसेना गणिका है।9

स्त्री मर्यादा– परस्त्रियों से सम्बन्धित बात को सुनना अच्छा नहीं माना जाता था। परस्त्री का नाम पूछना अथवा उसके विषय में कुछ पूछना अच्छा नहीं समझा जाता था। परस्त्री की कुशल पूछना भी आचार विरुद्ध था। इसलिए 'पञ्चरात्र' में जब बृहन्नला रूपधारा अर्जुन अपने अभिमन्यु से उनकी माता का कुशल पूछता है तो अभिमन्यु जो कि वेश परिवर्तन के कारण उसको पहचान नहीं पाता उसका यह प्रश्न सुनकर आश्चर्य चकित हो जाता है। परस्त्री का हरण सर्वथा अनुचित और धर्म विरुद्ध समझा जाता था। पञ्चरात्र में जब राजा विराट अर्जुन के समक्ष अपनी पुत्री उत्तरा से विवाह करने का प्रस्ताव रखते हैं तो अर्जुन उनके प्रस्ताव को अस्वीकार करते हुए कहता है कि मैंने अन्तःपुर की समस्त स्त्रियों को मातृवत् माना है इसलिये आपके द्वारा दी हुई उत्तरा को मैं अपने पुत्र अभिमन्यु के लिए ग्रहण करता हूँ अर्थात् उत्तरा को मैं पुत्रवधू के रूप में स्वीकार करता हूँ।10 'स्वप्नवासवदत्त' में ब्रह्मचारी तपोवन में आने पर वासवदत्ता को देखकर अन्दर प्रवेश करने में संकोच करता है। उसके ये शब्द कि–

'अरे यहाँ स्त्रियाँ हैं यह पता चलता है कि जिस स्थान पर स्त्रियाँ हों वहाँ पुरुषों का प्रवेश वर्जित था। परन्तु यह नियम केवल विवाहित स्त्रियों के लिए ही था। कन्यायें और तपस्विनी स्त्रियाँ निर्दोष दर्शना होने के कारण इस नियम का अपवाद थी। अर्थात् उन्हें देखने में कोई दोष नहीं था। उदाहरण स्वरूप विवाह के पूर्व वासवदत्ता और पद्मावती दोनों ही स्वच्छन्द रूप से विचरण करती थी। वासवदत्ता को पूजा करने के लिए अनावृत्त शिक्षिका में यज्ञ मंदिर जाते समय उदयन ने अपने बन्धनागार से देखा था और आश्रम में रहकर तपस्विनी का जीवन व्यतीत करने वाली पद्मावती भी जनसाधारण के द्वारा सहज में ही देखी जाती थी।11

पुरुषों की अवधारणा–सम्मान भावना – भासकालीन समाज में नारी समादरित थी। जन सामान्य से लेकर राजा–महाराजा तक उसके प्रति शुभ भाव रखते थे। कर्णभारम् का नायक कर्ण भी अपने कथन में जहाँ गौ–ब्राह्मणों के कल्याण की कामना करता है। वहाँ उदात्त स्वर में समस्त स्त्रियों का कल्याण हो, ऐसी भावना व्यक्त करता है। मुख्यतः ऐसी स्त्रियों के प्रति उसकी कल्याण भावना व्यक्त होती है। जो पति के प्रति पूर्ण निष्ठावान होती हैं। कर्ण का कथन देखें–अक्ष्योस्तु पतिव्रतानान् ।12

'ऊरुभंग' में दुर्योधन मरते समय कौटुम्बिक विग्रह को भूलकर अपने पुत्र दुर्जय को सीख देता है कि मेरी ही तरह पाण्डवों की सेवा करना, कुन्ती का आदेश मानना और सुभद्रा और द्रोपदी को मातृवत् समझना। दुर्योधन का यह कथन इस बात का प्रमाण है कि तत्कालीन परिवार में द्वेष और वैमनस्य का सर्वथा अभाव था तथा नारियों के प्रति सम्मान का भाव रखा जाता था–

श्लाघ्यश्रीरभिमानदीप्तहृदयो दुर्योधनो मे पिता
तुल्येनाभिमुखं रणे हत इति त्वं शोकमेवं त्यज।
स्पृष्ट्वा चैव युधिष्ठिरस्य विपुलं क्षौमासव्यं भुजं
देयं पाण्डुसुतैस्त्वया मम समं नामावसाने जलम्।।13

स्त्रियों के प्रति पुरुषों का दृष्टिकोण–महाकवि भास के समय में बंदिनी बनाई गई स्त्रियों के प्रति समाज कठोर था। उनके बन्दी बना लिये जाने पर भले ही मुक्त करा दिया जाय पर समाज उन्हें ग्रहण नहीं करता था। राम ने सीता को फिर से ग्रहण करना तभी स्वीकार किया जब देवताओं ने उनकी पवित्रता की साक्षी दे दी।14 स्त्रियाँ सम्पत्ति समझी जाती थी तथा परस्पर राजाओं को भी उपहार में दी जाती थी। महाभारत में धृतराष्ट्र सौ दास कन्याएँ सम्मान के प्रतीक स्वरूप कृष्ण को उपहार में देने का प्रस्ताव करते हैं।15

स्त्री सुरक्षा और सम्मान–समाज में स्त्रियों का आदर होता था। उनके प्रति पुरुष वर्ग करुणा का भाव रखता था। स्त्री वध का पूर्ण निषेध था। यहाँ तक कि स्त्री को भी अवध्य माना जाता था।16 स्त्री चाहे वह कन्या की वय में क्यों न हो, पिता को उसकी संरक्षा की नित्य चिन्ता बनी रहती थी। वह चिन्ता दो रूप में होती थी, एक तो उसकी परकीयों से सुरक्षा की चिन्ता और दूसरी उसके उचित परिवार में विवाह की चिन्ता। राजा कुन्ती भोज यद्यपि बड़े पराक्रमी और दानवीर राजा हैं फिर भी उन्हें अपनी पुत्री कुरंगी की चिन्ता बनी रहती है –

''कन्यापितुर्हि सततं बहुचिन्तनीयम्।''17

कन्या के भविष्य की सुनिश्चिता के लिये माता–पिता उसे उच्च कुल और सम्पन्न वर के साथ विवाह करते हैं। सम्पन्न दामाद के मिलने पर ही अभिभावक अपनी पुत्री का विवाह कर निश्चिन्त हो जाते थे। इस कथन में वस्तुतः अपनी कन्या की भविष्य रक्षा का ही भाव निहित है–

जामातृसम्पत्तिचिन्तयित्वा
पित्रा तु दत्ता स्वमनोभिलाषात्।
कुलद्वयं हन्ति मदेन नारी
कूलद्वयं क्षुब्धजला नदीव।।18

कन्याओं का महत्त्व– भासकालीन समाज में कन्या को बहुत महत्त्व दिया जाता था। कन्या का परिवार में जन्म होना पिता के लिये सौभाग्य की बात होती थी। केवल एक राजा ही नहीं अपितु सभी राजागण अपनी–अपनी राजकुमारियों को उसी प्रकार सम्मान देते थे जिस प्रकार युद्ध में बहादुर लोग विजय पताका को चाहते थे–

न तत्र कर्तव्यमिहास्ति लोके
कन्यापितृत्वं बहुवन्दनीयम्।
सर्वे नरेन्द्रा हि नरेन्द्र कन्यां
मल्लाः पताकामिव तर्कयन्ति।।19

पुरुष समुदाय की यह अपेक्षा होती थी कि उसकी बेटी के लिये सुयोग्य वर मिले। वह अपनी बेटी के भविष्य की सुरक्षा और वैभवशीलता का निश्चय करते समय पराक्रमी और सम्पन्न वर चाहता था। वह कन्या के लिये अनुकूल सुन्दर वर तलाशता था। वस्तुतः उसकी भावना नारी वर्ग की सुरक्षा के प्रति सदा विद्यमान रहती थी–

कुलं तावच्छलाध्यं प्रथममभिकाङ्क्षे हि मनसा
ततः सानुक्रोशं मृदुरपि गुणो ह्येष बलवान्।
ततो रूपे कान्तिं न खलु गुणतः स्त्रीजनभयात्
ततो वीर्योदग्रं न हि न परिपाल्या युवतयः।।20

लड़की के विवाह के समय माताओं की सलाह लेना अपेक्षित होता था क्योंकि माताएँ अपनी पुत्री के प्रति अधिक स्नेह रखती हैं। बेटियों की विदाई के समय माताएँ अधिक भाव विह्वल होती हैं तथा अच्छे वर की अभिलाषा रखती हैं। प्रद्योत अपनी पुत्री वासवदत्ता के विवाह के निर्णय के लिए महारानी को बुलाते हैं–

दुहितुः प्रदानकाले दुःखशीला हि मातरः।
तस्माद् देवी तावदाहूयताम् ।21

युद्ध के प्रति नारियों की वितृष्णा– दुशला और उत्तरा ही नहीं बल्कि कौरव माता गांधारी भी युद्ध में मारे गये पतियों और पुत्रों की विनाश लीला को देखकर आहत होती है। वे परस्पर विचार करती हैं कि मृत्यु को प्राप्त होने वाले आत्मीयजनों को हम कितनी ही जलांजलि दे दे किन्तु राजाओं की युद्ध लिप्सा खत्म नहीं हो सकती। निःसन्देह युद्ध के उन्माद के प्रति नारियाँ अपना विरोध प्रकट करती हैं ।22

राजनैतिक स्थिति– भास के नाटकों में स्त्रियाँ शासन में अधिक भाग नहीं लेती थी। केवल एक या दो उल्लेख मिलते हैं जहाँ तत्कालीन रानियों के राज्य संचालन का वृत्तान्त है। कौशाम्बी के राजा उदयन के बन्दी बना लिये जाने पर उसकी माता ने शासन का पूरा भार ग्रहण किया था। उसने राज्य कार्य इतनी निपुणता से किया कि अनुभवी मंत्रियों ने भी उसकी प्रशंसा की, केवल यहीं ऐसा उल्लेख है जो गुप्तकाल में स्त्रियों का राज्य संचालन में भाग लेना प्रकट करता है, अन्यथा राजा की मृत्यु के पश्चात् पुत्र के ही राज्य का संचालन करने के उल्लेख हैं।

राज्य के मंत्री वर्ग में भी किसी महिला को हम मंत्री रूप में नहीं पाते। केवल स्वप्नवासवदत्त में राज्य के कल्याण के लिए उदयन की रानी वासवदत्ता के अमात्य यौगन्धरायण की योजना में सहयोग देने का उल्लेख है, पर वह भी अप्रत्यक्ष रूप से। भास के नाटकों में राष्ट्रीय जीवन सीधा–सादा था। उस समय आज जैसी राज्य व्यवस्थाएँ नहीं थी। उस समय राजा ही शासन करता था और राजा के पश्चात् वंश परम्परानुसार राजा का पुत्र ही राज्याधिकारी होता था।

राजमहिषी के रूप में स्त्री का सम्मान– राजा के पश्चात् राजमहिषी का स्थान सर्वोपरि था। रानियों में ज्येष्ठ और राजा की प्राणवल्लभा महाराजा महिषी के पद को विभूषित करती थी। राज– महिषियों को भट्टिनी की संज्ञा से भी अभिहित किया जाता था। अमरकोष में भी कहा गया है– कि महाराज महिषी को देवी और अन्य राजमहिषियों को भट्टिनी कहते थे। पाणिनि प्रधान रानी को महिषी लिखते हैं और अन्य रानियों को प्रजापति। राजा की माता राजमाता पद की अधिकारिणी होती थी। अन्तःपुर में महाराज महिषी का ही एकछत्र शासन होता था। वहाँ सम्राट तक का अधिकार नहीं था।

वैयक्तिक स्वतंत्रता– भासकालीन समाज की नारी पुरुष की सहधर्मिणी के रूप में रहती थी। उसे बहुत कुछ क्षेत्रों में स्वतंत्रता का अधिकार था। राजपरिवारों की स्त्रियाँ भी स्वायत्त–धारिणी होती थी। उज्जयिनी के राजा प्रद्योत की पुत्री पद्मावती अविवाहित है और पिता के ऊपर आश्रित है फिर भी उसे इतने अधिकार प्राप्त हैं कि वह तपोवन में जाकर यथेष्ट दान दे सकती है वह तपोवन वासियों को सूचित करती है कि जिसको जिस वस्तु की आवश्यकता हो वह अपनी इच्छित वस्तु प्राप्त कर सकता है–

''अभिप्रेत प्रदाने तपस्विजन उपनिम्न्त्रयताम् तावत् कः किमत्रेच्छतीति'' ।23

इतना ही नहीं वह वासवदत्ता जैसी अपरिचित नारी को अपनी अभिरक्षा में रखने का साहस करती है। निःसन्देह उसे यह वैयक्तिक स्वतंत्रता प्राप्त है कि वह इतने बड़े दायित्व को स्वीकार कर सकते हैं। इसके लिए उसको किसी पुरुष संरक्षक से पूछने या सलाह करने की आवश्यकता नहीं। वह स्वतंत्र निर्णय लेने में पूर्णतः सक्षम है। कार्यवश बाहर जाने में स्त्रियों पर कभी कोई प्रतिबन्ध नहीं लगाया जाता था। सार्वजनिक उत्सवों में स्त्रियाँ अपने पति के साथ सम्मिलित होती थी। दुर्योधन के यहाँ यज्ञ में सब राजाओं का अपनी रानियों सहित सम्मिलित होना उस काल का मान्य आदर्श था।24 निम्न वर्ग की लड़कियाँ भी सार्वजनिक मंगलोत्सव में भाग लेती थी। गोप युवतियाँ भी गोप युवकों के साथ खेलती थी।

वैवाहिक स्वतंत्रता–

महाकवि भास के नाटकों का अध्ययन करने से ऐसा ज्ञात होता है कि विवाह का निर्णय करने में युवतियाँ स्वतंत्र थी। यद्यपि सर्वत्र ऐसे प्रसंग नहीं मिलते पर 'अविमारक' नाटक की नायिका कुरंगी यह कहती हुई दिखाई देती है कि मैं अपनी मालिक स्वयं हूँ। मेरा विवाह मेरे पिता मेरी इच्छा के बिना नहीं करेंगे। मैं जहाँ चाहूँगी वहाँ अपना विवाह करने का निर्णय लूँगी। उसका यह कथन उल्लेखनीय है। ''अहमात्मनः प्रभवामि।'' कुरंगी वैयक्तिक रूप से प्रेम प्रसंग में स्वच्छन्द दिखाई देती है। वह एक वर्ष तक माता–पिता और परिजन से छिपते अपने ही अन्तःपुर में अपने प्रेमी अविमारक को छिपाये रहती है। सामाजिक बन्धनों के प्रति विरोध करते हुए अपने व्यक्तिक प्रेम को संपुष्टि प्रदान करती है।25

बाल विवाह का वर्जन– भास के समय लड़कियों का विवाह परिवक्व अवस्था में किया जाता था। जब लड़की सब प्रकार से समक्ष और पूर्ण वयस्क हो जाती थी तभी उसके विवाह की चर्चा होती थी। कम आयु की लड़कियों का विवाह निषिद्ध था। इसी सन्दर्भ में कुन्तीभोज विवाह का प्रस्ताव लाने वाले राजाओं के दूतों को वापिस लौटा देते थे, क्योंकि उनकी पुत्री कुरंगी कम आयु की थी।26

''स चास्माभिरतिबाला कन्येत्यपदेश मुक्त्वा सुपूजितो विसर्जितः'' ।27

बाल विधवा के प्रति चिन्ता– कवि ने बाल विधवाओं के प्रति नारी मन में सोचने की एक दिशा दी है। कौरव और पाण्डवों के विनाशकारी युद्ध में अनेक नवविवाहितायें और बाल विवाहिताएँ विधवा हो गईं। वैधव्य जीवन कितना कष्टकारी और भयानक होता है। इसका प्रत्यक्ष रूप वधू उत्तरा के विषय में मूर्त हो उठता है। गांधारी और उसकी बहु दुशला युद्ध की विभीषणता पर विचार करती है। उनके विचार विनिमय का विषय है विधवाओं का दुरावस्था वस्तुतः कवि भास युद्ध के विनाशकारी परिणाम में नारी की पीड़ा को महसूस करते हैं और वे यह निष्कर्ष देना चाहते हैं कि युद्ध न हो, क्योंकि युद्ध बालाओं को वैधव्य का भीषण संसार देता है। इतना ही नहीं, जयद्रथ वध पर उसकी पत्नी दुशला का हा–हाकार और रुदन चित्रित कर कवि युद्ध की विनाश लीला को नारियों के दुर्भाग्य की कथा कहता है। इसी परिप्रेक्ष्य में जयद्रथ की पत्नी दुशाला कौरव पक्ष की है और अभिमन्यु की पत्नी उत्तरा पांडव पक्ष की है। फिर भी जब दोनों वैधव्य स्थिति में आ जाती हैं तो दोनों में परस्पर प्रेम सहानुभूति उमड़ पड़ती है। कवि यह प्रकट करना चाहता है कि युद्ध की भीषणता में भी करुणा की शीतलता विद्यमान रहती है।28

सम्पत्ति का अधिकार– भास की समय निम्न वर्ग की कुछ स्त्रियाँ गणिका के रूप में जीविकोपार्जन करती थी।29 इन प्रधान गणिकाओं के पास गाने और नाचने वाली लड़कियाँ होती थी।

भास के समय में भी महानगरों में वैश्याओं का निवास था तथा उनकी सर्व सामान्य जनता में विशिष्ट प्रतिष्ठा थी। वे रूप मंडित होकर जन सामान्य के मनोरंजन की वस्तु भी होती थी और वे परोपकार में भी अनुरक्त रहती थी। वे केवल भोग्या नहीं थी अपितु समाज का महत्त्वपूर्ण अंग भी थी।30

स्त्रीधन पर सभी का पूर्ण अधिकार– चारुदत्त में उल्लेख है कि पति के पास धरोहर रूप रखे गये अलंकारों का चोरी जाना सुनकर पति को निन्दा से बचाने के लिए ब्राह्मणी माता के घर से प्राप्त अपनी मुक्तावली देकर पति पर लगने वाले कलंक को दूर करना चाहती है। इससे प्रकट होता है कि कन्याओं के मातृगृह से आभूषण दहेज स्वरूप मिलते थे और वह स्त्री द्रव्य समझा जाता था। स्त्री के इस द्रव्य को ग्रहण करना पुरुष के लिए लज्जा की बात मानी जाती थी। चोरी गये आभूषणों के बदले धूता द्वारा अपनी माता से प्राप्त रत्नावली वसन्तसेना को दे देती है–

मयि द्रव्यक्षयक्षीणे स्त्रीद्रव्येणानुकम्पितः।

अर्थतः पुरुषो नारी या नारी सा•र्थतः पुमान्।।31

स्त्रियों का गुण

पतिव्रता– स्त्रियाँ एक पतिव्रत धारिणी होती थी। वे पर पति को उपहासस्पद मानती थी। ऐसी स्त्रियाँ अत्यन्त तेजमय होती थी। उनके तेज से बड़े–बड़े पराक्रमी भी हतप्रभ रह जाते थे।32 स्त्री अपने पति को संकटापन्न देखकर दुःखी हो उठती थी और पति की प्रसन्नता में आनंदाभिभूत हो जाती थी।33 किसी भी स्तर पर परीक्षा देने में संकोच नहीं करती थी। स्त्रियाँ अपनी पतिनिष्ठा की सत्यता को प्रमाणित करने के लिए स्त्रियाँ आग में भी प्रवेश कर जाती थी।34

मध्यमव्यायोग की ब्राह्मणी पतिव्रता स्त्री का आदर्श है। वह संकटापन्न स्थिति में पति के स्थान पर स्वयं प्राण दे–देना चाहती है। घटोत्कच ब्राह्मण परिवार के किसी सदस्य को मारकर स्वयं को प्रस्तुत करना चाहता है, पर ब्राह्मण की स्त्री पति को रोकती है तथा स्वयं ही अपने प्राण दे–देना चाहती है। वह अपने पति से तर्क सहित कहती है कि पतिव्रता स्त्री के लिए पति ही धर्म है–

''पतिमात्रधर्मिणी पतिव्रतेति नाम।

गृहीतफलेनैतेन शरीरेणार्यं कुलं च रक्षितुमिच्छामि'' ।35

घटोत्कच जब भीम को लेकर अपनी माँ हिडम्बा के पास पहुँचते हैं तो हिडम्बा अपने पति भीम को आदर देती है और अज्ञान में पुत्र द्वारा की गई भूल के लिए क्षमा मांगती है। वह राक्षसी होते हुए भी पति समर्पिता है। वह अपने पुत्र द्वारा भी भीम से क्षमा याचना करती है। निःसन्देह उसकी पतिनिष्ठा सराहनीय है।36

भीरूता– नारियाँ सहज भीरू होती हैं। शत्रु को आया देखकर वे उदास और निराश हो जाती थी तथा पति के समक्ष अपनी चिन्ता

व्यक्त करती थी। अभिषेकनाटक की तारा अपने पति बालि के शत्रु सुग्रीव को आया देखकर अपनी आतुरता प्रकट करती है।37

वात्सल्य– भासकालीन स्त्रियाँ जितनी अधिक निष्ठा अपने पति के सौभाग्य एवं वैभव के प्रति रखती थी। उतना ही स्नेह और दुलार अपने पुत्रों के प्रति करती थी। वस्तुतः उसके दो ही रक्षक थे पति और पुत्र। यह पतिनिष्ठा और पुत्र प्रेम ऊरुभंग की गांधारी में पूर्णतः दिखाई देता है। दुर्योधन की पराजय से दुःखी माता गांधारी एक और पुत्र को देखने के लिए अपनी आँखें खोलना चाहती है दूसरी ओर पतिव्रत धर्म चिह्न के रूप में बांधी गई आँखों की पट्टी को खोल नहीं पाती। वस्तुतः पुत्र प्रेम के आधिक्य में अविरल अश्रुओं की धार बहाती रहती है–

या पुत्रपौत्रवदनेष्वकुतूहलाक्षी
दुर्योधनास्तमितशोकनिपीतधैर्या।
अस्त्रैरजस्त्रमधुना पतिधर्म चिन्ह–
मार्द्रीकृतं नयनबन्धमिदं दधाति।।38

'ऊरुभंग' में दुर्योधन की पत्नी पौरवी और मालवी अपने पति दुर्योधन के प्रति पूर्ण निष्ठा और सेवाभाव रखती हैं। दुर्योधन की घायल अवस्था में वे दोनों पति के निकट होती हैं और अपने आपको वीर क्षत्राणी होने का गौरव अनुभूत करती हैं।

तपस्विनी– महाकवि भास के समय में स्त्रियाँ भी तपस्विनी हुआ करती थी और वे आश्रमों में रहती थी। राजमाता भी तपोवन में रहती थी। तपोवन में रहने वाली तापसियाँ दूसरों का कल्याण करने वाली उपदेशिका और व्रतधारिणी होती थी और तापसियों के संरक्षण में पद्मावती और वासवदत्ता कुछ समय के लिये निवास करने पहुँचती हैं। तापसी स्वीकार करती है कि तपोवन अतिथियों का घर ही होता है और तापसी सबकी संरक्षा करती हैं।40

शिष्टाचार– भासकालीन समाज में नारियाँ शिष्टाचार के गुण से अभिभूत होती थी। नारियाँ यद्यपि अन्य संस्कारों से भी परिपूर्ण रहती थी पर शिष्टाचार का विशेष ध्यान रखती थी। अपने से पूज्यजनों के प्रति उदार और कुलीन भाव व्यक्त करती थी। अपने से छोटों के प्रति स्नेह और सहानुभूति का सम्बन्ध बनाये रखती थी। 'स्वप्नवासवदत्तम्' की वासवदत्ता छद्म रूप में रही है। दासी द्वारा उदयन का सौन्दर्य वर्णन किया जा रहा है पर वह यह वर्णन सुनना उचित नहीं मानती। वासवदत्ता का विचार है –

''अयुक्तं परपुरुषसंकीर्त्तनं श्रोतुम्।।''41

धाय कर्म– स्त्री को विभिन्न रूपों में देखा जाता था। भास के नाटक में स्त्री का उज्जवल रूप धाय माता के रूप में दिखाई देता है। भास ने माता से भी बढ़कर ऊँचा स्थान धाय माँ को दिया है। कर्ण की जन्मदात्री माता कुन्ती है पर उसके प्रति कर्ण का कोई भाव नहीं है जबकि कर्ण अपनी धाय माँ राधा को पूज्य भाव से स्मरण करता है। उसे ऐसी माँ का पुत्र होने पर गर्व है।42 ऐसी माँ की आज्ञा मानते हुए वह युधिष्ठिरादि अपने छोटे भाईयों पर अस्त्र नहीं चलाता।

कल्याण की भावना– भासकालीन समाज में राजमातायें प्रजाजनों के प्रति शुभ भावनाएँ रखती थी। मुख्यतः युद्ध क्षेत्र में जाते समय, यात्रा पर जाते समय अथवा किसी कार्य विशेष के लिए जाते समय नारियाँ मांगलिक रक्षासूत्र पुरुषों या सैनिकों के हाथ में बांधती थी। 'प्रतिज्ञायौगन्धरायण'' में राजमाता सब बन्धुओं के हाथ से स्पर्श किया हुआ रक्षासूत्र यौगन्धरायण के पास भेजती है, ताकि वह अभियान में जाते समय सभी लोगों को पहना सके।43

कोमल हृदया और महान वत्सला– नारी प्रकृति से कोमल और वात्सल्यमय होती हैं। उसकी वह वत्सलता केवल शिशु जगत् तक ही सीमित नहीं रहती अपितु पशु–पक्षी और वृक्ष लतिकाओं तक विस्तृत होती हैं। मंदोदरी जैसी महारानी अत्यन्त मण्डन प्रिय हैं। फिर भी अशोकवाटिका के पत्रों, हरे–भरे वृक्षों और सुन्दर पावकों के प्रति उसका स्नेह सहज है।44 स्त्रियों में साधारणतः साहस की कमी होती थी। भय का कारण उपस्थित होने पर हा–हाकार करना मात्र उनके लिए प्रतिकार रह जाता था। ''हा–हाकार मात्र प्रतिकारासु स्त्रीषु'' वे प्रकृत्या भीरू होती थी। पर निम्न वर्ग की स्त्रियों में पर्याप्त साहस विद्यमान रहने के उल्लेख मिलते हैं। वे अपनी रक्षा स्वयं कर सकती थी। शकार के अनुचित व्यवहार पर चेटी उसे दण्ड देती हैं।45

निष्कर्ष–

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि भासकालीन समाज में नारियों की स्थिति सम्मानजनक एवं प्रतिष्ठापूर्ण थी। भास ने विभिन्न स्त्री–पात्रों के माध्यम से नारी महत्ता को प्रतिष्ठित किया है। भासकालीन पुरुष निःसन्देह नारियों का आदर करता था। उसकी शिक्षा–दीक्षा के साथ सम्पत्ति में सहभागिता निश्चित करता था। विधवाओं तक को आदर दिया जाता था। समग्रतः नारी सभी स्वरूपों में मूल्यवान थी।

संदर्भ–

1. अविमारक नाटक तृतीय अंक षष्ठ श्लोक पृ. 60
2. प्रतिज्ञायौगन्धरायण नाटक अंक 2 पृ. 52
3. प्रतिमा. अंक प्रथम पृ. 60
4. प्रतिज्ञायौगन्धरायण प्रथम अंक पृ. 3
5. स्वप्नवासवदत्तम् द्वितीय अंक पृ. 37
6. प्रतिमानाटक प्रथम अंक अठाइसवाँ श्लोक पृ. 55
7. प्रतिमानाटक तृतीय अंक पन्द्रहवाँ श्लोक पृ. 110
8. स्वप्नवासवदत्तम् षष्ठ अंक पृ. 164
9. चारुदत्त नाटक भास द्वारा रचित पृ. 37–38
10. पञ्चरात्र नाटक भास द्वारा रचित पृ. 93–94
11. स्वप्नवासवदत्तम् नाटक भास द्वारा रचित पृ. 22–23
12. कर्णभारम् नाटक प्रथम अंक तेरहवाँ श्लोक पृ. 13
13. ऊरुभंग नाटक प्रथम अंक तिरेपन श्लोक पृ. 59
14. प्रतिमानाटक 7 पृ. 59

15. महाभारत 2–89–19
16. अभिषेकनाटक पंचम अंक सत्रहवाँ श्लोक पृ. 93
17. अविमारकनाटक प्रथम अंक द्वितीय श्लोक पृ. 5
18. अविमारकनाटक प्रथम अंक तृतीय श्लोक पृ. 6
19. अविमारकनाटक प्रथम अंक नौवा श्लोक पृ. 20
20. प्रतिज्ञायौगन्धरायण नाटक द्वितीय अंक चतुर्थ श्लोक पृ. 51
21. प्रतिज्ञायौगन्धरायण नाटक द्वितीय अंक पृ. 52
22. दूतघटोत्कचम् नाटक, पृ. 6–7
23. स्वप्नवासवदत्तम् प्रथम अंक पृ. 22
24. पञ्चरात्रम् प्रथम अंक श्लोक 2 पृ. 3
25. अविमारक नाटक पृ. 87
26. दूतघटोत्कच प्रथम अंक श्लोक पृ. 21
27. अविमारकनाटक, पृ. 21
28. दूतघटोत्कच प्रथम अंक श्लोक पृ. 9
29. चारुदत्त नाटक प्रथम अंक पृ. 22
30. अविमारक नाटक द्वितीय अंक पृ. 46
31. चारुदत्त तृतीय अंक श्लोक 17 पृ. 128
32. अभिषेकनाटक द्वितीय अंक अठारहवाँ श्लोक 2/18, पृ. 33
33. अभिषेकनाटक द्वितीय अंक छब्बीसवाँ श्लोक पृ. 39
34. अभिषेकनाटक सप्तम अंक छब्बीसवाँ श्लोक पृ. 108
35. मध्यमव्यायोग नाटक अंक प्रथम, पृ. 23
36. मध्यमव्यायोग नाटक पृ. 44
37. अभिषेकनाटक प्रथम अंक श्लोक पृ. 8
38. ऊरुभंगम् नाटक प्रथम अंक चालीसवाँ श्लोक पृ. 46
39. ऊरुभंगम् नाटक प्रथम अंक पृ. 46
40. स्वप्नवासवदत्तम् प्रथम अंक पृ. 16
41. स्वप्नवासवदत्तम् तृतीय अंक पृ. 48
42. कर्णभारम् नाटक प्रथम अंक सप्तम श्लोक पृ. 7
43. प्रतिज्ञायौगन्धरायण प्रथम अंक, श्लोक 4, पृ. 10
44. अभिषेकनाटक तृतीय अंक, श्लोक 1, पृ. 40
45. चारुदत्तनाटक प्रथम अंक पृ. 207